2018 **Set - 2**

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा (10th) **Full Marks - 70**

Model Question

नृत्य - कथक

खण्ड - क (GROUP - A)

(I) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में से किसी एक सही उत्तर को चुनिए - $1 \times 35 = 35$

1. ताल कहरवा में कितनी मात्राएँ होती हैं?

   a) 8 b) 6

   c) 7 d) 12

2. कथक नृत्य में बहुत महत्व है -

   a) ताल b) गायन

   c) भाव d) इनमें से कोई नहीं

3. झपताल में कितने विभाग होते हैं?

   a) 4 b) 5

   c) 7 d) 8

4. चार ताल में कितनी खाली होती है?

   a) 3 b) 4

   c) 5 d) 2

5. ताल में सम के चिन्ह को किस प्रकार दर्शाया जाता है?

   a) ० b) ।

   c) × d) ॥

6. ताल के जिस मात्रा से गीत आरम्भ होता है, वह स्थान क्या कहलाता है?

   a) समग्रह b) ग्रह

   c) अतीत ग्रह d) अनागत ग्रह

7. जिस टुकड़े से नर्तक अपना नृत्य प्रारम्भ करता है उसे क्या कहते हैं?

   a) परन b) तोड़ा

   c) आमद d) तिहाई

8. नृत्य के गतों में हस्तक बदलने की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?

a) पलटा b) चलन

c) कसक d) मसक

9. तीनताल कितने मात्रा का होता है?

a) 4 b) 16

c) 10 d) 8

10. लय कितने प्रकार के होते हैं?

a) 2 b) 4

c) 3 d) 5

11. कथक का विकास ..... काल में ज्यादा हुआ।

(a) मौर्य (b) मुगल

(c) गुप्त (d) अंग्रेज

12. नृत्य में तालबद्ध बोलों के छोटे समूह को ..... कहते हैं।

(a) टुकड़ा (b) तोड़ा

(c) आमद (d) परन

13. नृत्य के चाल को ..... कहते हैं।

(a) निकास (b) तत्कार

(c) गत (d) ठाट

14. दोनों हाथों के संयोग से जो स्थिति बनती है, उसे ..... कहते हैं।

(a) संयुक्त मुद्रा (b) असंयुक्त मुद्रा

(c) अंचित (d) कसक

15. अपने स्थान से स्वाभाविक रूप से चलने को ..... कहते हैं।

(a) तत्कार (b) चलन

(c) गतभाव (d) चक्कर

16. गत निकास का विकास ..... में अधिक हुआ।

(a) आगरा (b) जयपुर

(c) बनारस (d) लखनऊ

17. धमार ताल में ....., ..., ... पर ताली होती है।

(a) 1, 2, 7
(b) 1, 6, 13
(c) 1, 6, 11
(d) 1, 5, 8

18. सलामी को ..... भी कहते हैं।

(a) आमद
(b) नमस्कार
(c) वंदना
(d) ठाट

19. नृत्य में समान गति को ..... कहते हैं।

(a) लय
(b) मात्रा
(c) ठेका
(d) ताल

20. भाव से ..... की उत्पत्ति होती है।

(a) ताल
(b) रस
(c) गुण
(d) मुद्रा

21. झपताल में ..... खाली होती है।

(a) 1
(b) 2
(c) 3
(d) 4

22. 12 मात्राओं के ताल को ..... कहते हैं।

(a) तीनताल
(b) झपताल
(c) एकताल
(d) रूपक

23. परन ..... प्रकार का होता है।

(a) एक
(b) दो
(c) तीन
(d) चार

24. प्रत्येक ताल की तत्तकार उसकी ..... और ..... के अनुसार होती है।

(a) रस और भाव
(b) मात्रा और विभाग
(c) लय और मात्रा
(d) मात्रा और आवर्तन

25. एक परन में ..... अवश्य होती है।

(a) आवर्तन
(b) कवितांगी
(c) तिहाई
(d) मात्रा

26. तालबद्ध रचना को ..... कहते हैं।

(a) बोल (b) सम

(c) सलामी (d) तत्कार

27. ..... में कथा प्रधान है।

(a) ओडिसी (b) भरतनाट्यम

(c) कथक (d) मोहिनीअट्टम

28. खाली दर्शाने का चिन्ह ..... होता है।

(a) X (b) 2

(c) 0 (d) 3

29. कहरवा ताल में ..... विभाग होते हैं।

(a) 2 (b) 3

(c) 4 (d) 5

30. कहरवा ताल में पहली मात्रा पर ..... और पाँचवी पर ..... होती है।

(a) सम, खाली (b) खाली, सम

(c) सम, दूसरी ताली (d) सम, तीसरी ताली

31. पाद-विच्छेप के दो प्रकार ..... और ..... हैं।

(a) चारी, गति चारी (b) चारी, भूमिचारी

(c) गतिचारी, भूमिचारी (d) भूमिचारी, आकाशचारी

32. नृत्य में हाथ-पैर के संयुक्त चलन को ..... कहते हैं।

(a) स्थानक (b) करण

(c) अंगहार (d) रेचक

33. गति के मुख्य दो प्रकार ..... और ..... होते हैं।

(a) चलित, स्थिर (b) अंचित, कुंचित

(c) कसक, मसक (d) रेचक, स्थानक

34. बोल के तीन प्रकार ....., ... और ..... होते हैं।

(a) नृत्यांगी, परन, प्रिमलू (b) नृत्यांगी, कवितांगी, तालांगी

(c) कवितांगी, परन, प्रिमलू (d) नृत्यांगी, मिश्रतोड़ा, परन

35. ..... से नृत्य आरम्भ होता है और ..... से समाप्त होता है।

(a) ठाट, आमद (b) स्थानक, स्थानक

(c) सलामी, तत्कार (d) ठाट, तिहाई

(II). किन्हीं दस (10) प्रश्नों के उत्तर दें :- $2 \times 10 = 20$

1. बोल किसे कहते हैं तथा इसके कितने प्रकार होते हैं?
2. टुकड़ा तथा तोड़ा में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. गत-भाव से आप क्या समझते हैं?
4. परन तथा चक्करदार परन में अंतर स्पष्ट करें।
5. आमद तथा सलामी का अर्थ स्पष्ट करें।
6. नृत्य किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं?
7. जब किसी कथा के अनुसार अभिनय कर नृत्य किया जाए तो उसे कौन-सा नृत्य कहते हैं?
8. तत्तकार किसे कहते हैं?
9. कथक नृत्य प्रारम्भ करने की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?
10. गत-निकास और गत-भाव में अंतर स्पष्ट करें।
11. मुद्रा और हस्तक में अन्तर स्पष्ट करें।
12. पढ़न्त किसे कहते हैं?
13. अन्चित तथा कुन्चित में अंतर स्पष्ट करें।
14. रेचक किसे कहते हैं, इसके कितने प्रकार होते हैं?
15. कसक और मसक में अंतर स्पष्ट करें।

(III). दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : किन्हीं तीन का उत्तर दें :- $3 \times 5 = 15$

1. कथक नृत्य में वेश-भूषा पर प्रकाश डालें।

अथवा

कथक नृत्य में ठुमरी और कवित का उपयोग क्या है? इसके उपयोगों पर प्रकाश डालें।

2. तीनताल का विवरण दें तथा तीनताल का ठाह, दुगुन लिखें।

अथवा

झपताल का विवरण दें तथा झपताल का ठाह, दुगुन लिखें।

3. दादरा ताल का परिचय देते हुए ठाह एवं दुगुन लिखें।

अथवा

तीनताल में चार तत्कार लिखें।

Answer of Objective (खण्ड क)

1.	a	2.	a	3.	a
4.	d	5.	c	6.	b
7.	c	8.	a	9.	b
10.	c	11.	b	12.	a
13.	c	14.	a	15.	b
16.	d	17.	c	18.	b
19.	a	20.	b	21.	a
22.	c	23.	b	24.	b
25.	c	26.	a	27.	c
28.	c	29.	a	30.	a
31.	a	32.	b	33.	a
34.	b	35.	b		

2018 **Set - 2**

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा (10th) **Full Marks - 70**

नृत्य - कथक **Model Question**

खण्ड - क (GROUP - A)

(II). किन्हीं दस (10) प्रश्नों के उत्तर दें :- $2 \times 10 = 20$

1. बोल किसे कहते हैं तथा इसके कितने प्रकार होते हैं?

उ० : तालबद्ध रचना को बोल कहते हैं। इसके मुख्य तीन प्रकार होते हैं -

क) नृत्यांगी - जिसमें नृत्य के वर्ण जैसे - ता थेई आदि हों।

ख) तालांगी - जिसमें तबला या पखावज के वर्ण हों।

ग) कवितांगी - जिसमें कविता हो।

2. टुकड़ा तथा तोड़ा में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उ० : नृत्य में तालबद्ध बोलों के छोटे समूह को टुकड़ा कहते हैं। यह छोटा होता है।

तालबद्ध बोलों के बड़े समूह को तोड़ा कहते हैं। इसमें विभिन्न लयकारियां भी दिखाई जाती है।

3. गत-भाव से आप क्या समझते हैं?

उ० : कथक नृत्य में नर्तक अकेले ही किसी कथानक के भाव को अंग-संचालन द्वारा प्रकट करता है। नर्तक सभी पात्रों का अभिनय अकेले ही एक-दूसरे के बाद करता है। जैसे - कृष्णलीला में कभी कृष्ण, कभी गोपियां, कभी ग्वाल-बाल, कभी यशोदा का अभिनय करता है। इसका विशेष विकास जयपुर घराने में हुआ।

4. परन तथा चक्करदार परन में अंतर स्पष्ट करें।

उ० : नृत्य के जोरदार बोलों का वह समूह जो दो, तीन, चार अथवा अधिक आवृतियों का हो, उसे परन कहते हैं।

चक्करदार परन में किसी वजनदार और खुले बोल-समूह को तीन बार बजाकर सम पर आते हैं। चक्करदार परन को तिहाई का एक विशिष्ट प्रकार भी कहा जा सकता है।

5. आमद तथा सलामी का अर्थ स्पष्ट करें।

उ० : जिस टुकड़े से नर्तक अपना नृत्य प्रारंभ करता है, उसे आमद कहते हैं।

सलामी को नमस्कार भी कहते हैं। राजदरबारों में पहले नर्तक नृत्य के किसी तोड़े के द्वारा राजा को नमस्कार करता था, उसे सलामी कहा जाता था। सलामी इस प्रकार समाप्त होती है कि सम पर सलाम या नमस्कार करने की मुद्रा आती है।

6. नृत्य किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं?

उ० : शरीर के विभिन्न अंगों के संचालन द्वारा मन के भाव को प्रकट करने को नृत्य कहते हैं। नृत्य संगीत का अंग है।

नृत्य दो प्रकार के होते हैं - लोकनृत्य एवं शास्त्रीय नृत्य।

लोकनृत्य किसी भी पर्व या शुभ अवसर पर थिरकने को कहते हैं। ये नियमबद्ध नहीं होते, जबकि शास्त्रीय नृत्य नियमबद्ध होते हैं एवं कठिन साधना की आवश्यकता होती है।

7. जब किसी कथा के अनुसार अभिनय कर नृत्य किया जाए तो उसे कौन-सा नृत्य कहते हैं?

उ० : जब किसी कथा के अनुसार अभिनय कर नर्तक नृत्य करे तो उसे गतभाव कहते हैं। इसे नर्तक अकेले ही अंग-संचालन के द्वारा सभी पात्रों का अभिनय एक-दूसरे के बाद करता है। इसमें नर्तक पौराणिक कथानकों का चयन करता है।

8. तत्तकार किसे कहते हैं?

उ० : नृत्य में पैरों में बंधे घुंघरूओं से जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसे तत्कार कहते हैं, जो नर्तक के पद् संचालन के द्वारा उत्पन्न होता है। जैसे - ता थेई थेई तत्। इसी ध्वनि के कारण इसका नाम तत्कार पड़ा है। कथक नृत्य में इसका विशेष महत्व है। प्रत्येक ताल की तत्कार उसकी मात्रा और विभाग के अनुसार होती है।

9. कथक नृत्य को प्रारम्भ करने की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?

उ० : कथक नृत्य प्रारंभ करने के तरीके को ठाट कहते हैं। इसमें छोटे-छोटे टुकड़े, मुखड़े, तिहाई आदि लेकर नेत्र, भौं, गर्दन, कलाई आदि को लयबद्ध संचालन करते हैं। कुछ विद्वान टुकड़ा या परन के बाद एक मुद्रा में खड़े होने को ठाट कहते हैं। कुछ इसे करन भी कहते हैं।

10. गत-निकास और गत-भाव में अंतर स्पष्ट करें।

उ० : गत निकास में नर्तक किसी एक मुद्रा में निकल कर आता है और उसी मुद्रा में ठाह व दुगुन में चलन करके दिखाता है। निकास का अर्थ है निकलना।

गत-भाव में नर्तक अकेले ही किसी कथानक के भाव को अंग-संचालन द्वारा प्रकट करता है। कथानक के सभी पात्रों का अभिनय नर्तक अकेले ही करता है।

11. मुद्रा और हस्तक में अन्तर स्पष्ट करें।

उ० : नृत्य में भावों को प्रकट करने के लिए शरीर की एक विशिष्ट स्थिति को मुद्रा कहा गया है। इसके नृत्य की भाषा कहा गया है।

कथक नृत्य में लय-ताल में हाथ के संचालन को हस्तक या हस्तमुद्रा कहते हैं। हस्तक में पूरे हाथ का संचालन होता है। हस्तक से किसी भाव की अभिव्यक्ति नहीं होती, बल्कि टुकड़े - परन आदि में इनका प्रयोग होता है।

12. पढ़न्त किसे कहते हैं?

उ० : कभी-कभी नर्तक नृत्य के किसी बोल की बारीकियों को समझाने के लिए उसे नाचने के पहले मुख से पढ़कर लय-ताल में सुना देता है, जिसे पढ़न्त कहते हैं। नृत्य में किसी बोल को लय-तान में सुनाना पठन्त कहलाता है।

13. अन्चित तथा कुन्चित में अंतर स्पष्ट करें।

उ० : पैर के दोनों पंजे उठाकर केवल ऐड़ी से पृथ्वी पर आघात करने को अंन्चित कहते हैं।

ऐड़ी उठाकर खाली पंजों से पृथ्वी पर आघात करने के बाद उसे दूसरे पैर के पीछे ले जाने को कुंचित कहते हैं।

14. रेचक किसे कहते हैं, इसके कितने प्रकार होते हैं?

उ० : शरीर के विभिन्न अंगों को अलग-अलग ढंग से लय में संचालन करने को रेचक कहते हैं।

इसके चार प्रकार होते हैं -

1. पद रेचक, 2. कटि रेचक, 3. हस्त रेचक, 4. ग्रीवा रेचक

15. कसक और मसक में अंतर स्पष्ट करें।

उ० : कथक नृत्य में सुंदरता के साथ कलाई चलाने को 'कसक' कहते हैं।

सांस लेने व छोड़ने में वक्ष के उतार-चढ़ाव को 'मसक' कहते हैं। जिस तरह चलन-फिरन एक साथ प्रयोग किए जाते हैं, उसी प्रकार कसक-मसक शब्द एक साथ प्रयोग किए जाते हैं।

(III). दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : किन्हीं तीन का उत्तर दें :- $5 \times 3 = 15$

1. कथक नृत्य में वेश-भूषा पर महत्व डालें।

उ० : कथक नृत्य की परम्परागत वेशभूषा मुसलमानी है। मुगलकाल में नृत्यकारों को विशेष राज्याश्रय मिला, फलस्वरूप नृत्य में श्रृंगारिक हाव-भाव एवं मुद्राओं की बहुतायत हो गई।

इसमें नर्तक (पुरुष) चूड़ीदार पायजामा एवं घेरदार बाराबंदी या कुर्ता पहनते हैं। ऊपर से शेरवानी पहन लेते हैं। सिर में कामदार जरी या साटन की दुपलिया या चुन्नटदार टोपी पहनते हैं। कभी-कभी सिर खाली भी रहता है। कुछ नर्तक कुर्ते के ऊपर खुले गले का वास्केट भी पहन लेते हैं और एक कंधे से लेकर कमर तक तिरछा दुपट्टा बांध लेते हैं। दूसरी पोशाक में कामदार या सादी धोती पहनते हैं। कमर के ऊपर का भाग खुला रहता है और दोनों जांघों पर एक दुपट्टा रहता है।

कथक में स्त्रियों की वेशभूषा साड़ी और ब्लाउज है। साड़ी उल्टे पल्ले की होती है। स्त्रियां धोती के नीचे चूड़ीदार पायजामा पहनती हैं क्योंकी चक्कर लगाने के लिए धोती बहुत उचित वस्त्र नहीं है। स्त्रियों की दूसरी पोशाक चूड़ीदार पायजामा और घेरदार कुर्ता है। कुर्ता के ऊपर दुपट्टा होता है, जिससे वक्ष को ढक लेते हैं। तीसरी पोशाक लहंगा, अंगिया और चुनरी होती है। लहंगा के नीचे चूड़ीदार पायजामा होता है।

अथवा

कथक नृत्य में ठुमरी और कवित का उपयोग क्या है? इसके उपयोगों पर प्रकाश डालें।

उ० : कथक नृत्य में कवित्त पढ़ने एवं उसका भाव दिखाने की प्राचीन परम्परा है। रीतिकाल में राधा-कृष्ण से संबंधित ब्रज भाषा में अनेक श्रृंगारिक पदों की रचना हुई। मुगलकाल में बादशाहों की श्रृंगारिका अपनी चरम सीमा पर पहुंची। आध्यात्मिकता समाप्त हुई और पदों के स्थान पर ठुमरियों की रचना होने लगी। ऐसी कोई नायिका नहीं जिसका कोई चित्रण ठुमरी में नहीं हुआ हो। जादू भरे तोरे नैन, लाखों के बोल सहे, पी की बोली न बोल आदि ठुमरियों के अनेक उदाहरण हैं। ठुमरी के प्रत्येक शबद का भाव विभिन्न प्रकार से दिखाते हैं। लखनऊ घराने के नर्तक में बड़े निपुण हैं। सभी ठुमरी को गाकर ऐसा सुंदर भाव दिखा देते हैं कि देखते ही बनता है।

2. तीनताल का विवरण दें तथा तीनताल का ठाह, दुगुन लिखें।

उ० : तीनताल का परिचय –

इस ताल में 16 मात्राएं होती हैं। चार विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग में 4-4 मात्राएं होती हैं। इस ताल में तीन ताली एवं एक खाली होती है। पहली ताली 1 मात्रा पर, दूसरी ताली 5 मात्रा पर एवं तीसरी ताली 13 मात्रा पर होती है। खाली 9 मात्रा पर होती है। पहली ताली के लिए + या × चिन्ह का प्रयोग, दूसरी ताली के लिए 2, तीसरी ताली के लिए 3 का प्रयोग एवं खाली के लिए 0 चिन्ह का प्रयोग करे हैं। इसे त्रिताल भी कहते हैं।

ठेका या बोल (ठाह लय में)

X	2	0	3	X
धा धीं धीं धा	धा धीं धीं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा	धा
1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16	1

दुगुन

X				2				0				3				X
धाधीं	धींधा	धाधीं	धींधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधीं	धींधा	धाधीं	धींधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	1

अथवा

झपताल का विवरण दें तथा झपताल का ठाह, दुगुन लिखें।

उ० : झपताल का परिचय –

इस ताल में 10 मात्राएं होती हैं। 4 विभाग होते हैं। विभाग में 2-3-2-3 मात्राएं होती हैं। अर्थात् पहले एवं तीसरे विभाग में 2-2 मात्राएं, दूसरे एवं चौथे विभाग में 3-3 मात्राएं होती हैं। इस ताल में 3 ताली एवं 1 खाली होती है। पहली ताली 1 मात्रा पर, दूसरी ताली 3 मात्रा पर तीसरी ताली 8 मात्रा पर तथा खाली 6 मात्रा पर होती हे। पहली ताली के लिए क्रमशः + या ×, दूसरी ताली के लिए 2, तीसरी ताली के लिए 3 तथा खाली के लिए 0 चिन्ह का प्रयोग होता है।

ठेका या बोल (ठाह लय में)

X	2	0	3	X
धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना	धी
1 2	3 4 5	6 7	8 9 10	1

दुगुन –

X		2			0		3			X
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धी
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	1

3. दादरा का परिचय देते हुए ठाह एवं दुगुन लिखें।

उ० : दादरा का परिचय –

इस ताल में 6 मात्राएं होती हैं एवं 2 विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग में 3-3 मात्राएं होती

हैं। इसमें 1 ताली एवं 1 खाली होती है। ताली 1 मात्रा पर, खाली 4 मात्रा पर होती है। ताली के लिए + एवं खाली के लिए 0 चिन्ह का प्रयोग होता है।

ठेका या बोल (ठाह लय में)

X	0	X
धा धी ना	धा तू ना	धा
1 2 3	4 5 6	1

दुगुन

X	0	X
धाधी नाधा तूना	धाधी नाधा तूना	धा
1 2 3	4 5 6	1

अथवा

तीनताल में चार तत्कार लिखें।

उ० : 1.

X	2
ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-	ता-थेई थेईता- तत -
ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-	ता-थेई थेईता- तत -
0	3

2.

X	2
ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-	ता-थेई थेईता- तत तत
ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-	ता-थेई थेईता- तत तत
0	3

3.

X	2
ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-	ता-थेई थेईता- तत-त -तत-
ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-	ता-थेई थेईता- तत-त -तत-
0	3

4.

X	2
तत-- ता-थेई थेईता- तत--	ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-
तत-- ता-थेई थेईता- तत--	ता-थेई थेईता- आ-थेई थेईता-
0	3